4

क्या हम लापरवाह हो रहे हैं?

(2:1-4)

इब्रानियों 2:1-4 में हमें पहली सीधी ''प्रोत्साहन की बात'' मिलती है। मैं इस संदेश को बदलकर लिखता हूं: *वचन की बेपरवाही न करें!*

इस वचन का आरम्भ ''इस कारण'' वाक्यांश के साथ होता है जो इसे उससे जोड़ता है जो पुस्तक में पहले ही लिखा गया है। *क्योंकि* यीशु परमेश्वर का पुत्र है, *क्योंकि* यीशु की आराधना की जानी चाहिए, *क्योंकि* यीशु ने सब वस्तुओं की सृष्टि की और *क्योंकि* यीशु सब पर राज करता है, ''हम उन बातों पर जो हमने सुनी हैं, और भी मन लगाएं, ऐसा न हो कि बहकर उनसे दूर चले जाएं'' (आयत 1)। आयत 3 में ''निश्चिन्त'' शब्द मिलता है। ''बैठकर दूर जाना'' और ''निश्चिन्त'' बेपरवाह होने का सुझाव देते हैं; मैं दोनों अवधारणाओं को समेटने के लिए ''लापरवाह'' शब्द का इस्तेमाल कर रहा हूं। वचन के साथ, मसीहियत के साथ और अपने प्राणों के साथ बेपरवाह होने से बचने के लिए कदम उठाने आवश्यक हैं!

पाप

अपने आरम्भिक पाठ में मैंने सुझाव दिया था कि इस पत्री के आपके मूल पाठकों ने अपने मसीही जीवन में आरम्भ तो बहुत ही अच्छा किया था, पर अब वे विश्वास त्याग के खतरे में थे। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि उन्होंने मसीहियत को छोड़ने का निर्णय सोच समझकर लिया या एक दिन नाराज़ होकर उन्होंने इसे छोड़ दिया। बल्कि हमारे वचन पाठ में यह संकेत मिलता है कि बिना लंगर[1] के समुद्र में बह जाने वाली नाव की तरह वे *बह रहे* थे। वर्षों से मैंने कइयों को विश्वास को छोड़ते देखा है।[2] कुछ ने इसलिए छोड़ा, क्योंकि वे परेशान थे, पर अधिकतर अपनी बेपरवाही के कारण अविश्वासी बन गए। आयत 3 की शब्दावली का इस्तेमाल करें तो वे उसके प्रति जो उनके प्राण को बचा सकता था *निश्चिन्त* हो गए।

लूका 15 अध्याय में खोई हुई चीज़ों के दृष्टांतों में, पहली चीज़ खोई हुई भेड़ है। आम तौर पर भेड़ घृणित प्राणी नहीं होती। यह चरवाहे को तंग करने के लिए गुम नहीं होती। बल्कि यह घास की तलाश में एक से दूसरी जगह घूमती रहती है और अन्त में सिर उठाकर देखती है कि झुण्ड की बाकी भेड़ें दिखाई नहीं देती या खो गई हैं!

आज के बहने और निश्चिन्त रहने और लापरवाही के दर्दनाक परिणामों के साथ कई उदाहरण दिए जा सकते हैं।[3] विवाह के प्रति निश्चिन्त रहने वाले पति या पत्नी या दोनों के कारण विवाह नष्ट हो सकता है। अपने साथी से बेवफ़ाई करने वाले विवाहित लोगों ने आवश्यक नहीं है कि इसकी योजना बनाई हो। पर एक बार वे लापरवाह होकर, वचन से बाहर के सम्बन्धों में बह जाते हैं।

फिर से मैं कहता हूं कि विश्वास को छोड़ने वाले अधिकतर लोग जिन्हें मैं जानता हूं सोच समझकर नहीं गए, पर निश्चिन्त रहने के कारण वे बह गए। फिर बीच में ही उन्होंने अपने ''पहले प्रेम'' को छोड़ दिया (प्रकाशितवाक्य 2:4)। उन्होंने वचन का अध्ययन वैसे करना छोड़ दिया, जैसे वे कभी करते थे। वे प्रार्थना कम करने लगे। वे आराधना सभाओं में बीच-बीच में नहीं जाते थे। वे प्रभु की सेवा में उतने सक्रिय नहीं थे। वे बहते गए ... बहते गए ... बहते गए ... धीरे-धीरे ... धीरे-धीरे ... धीरे-धीरे ... पर निश्चित रूप में प्रभु से दूर चले गए।

महत्व

परमेश्वर से दूर बह जाना और उसकी इच्छा की बेपरवाही करना हमारे लिए आज्ञा न मानने जितना चौंकाने वाला न भी हो पर अन्तिम परिणाम दोनों का एक जैसा है। जान-बूझकर किए गए काम के कारण हमारी बेपरवाही के एक ही परिणाम होने के उदाहरण दिए जा सकते हैं। कई साल पहले मेरे भतीजे और उसकी पत्नी की एक पड़ोसिन को मानसिक परेशानियां थीं जिसने अपनी नन्ही लड़की का गला दबा दिया। उसी साल एक मां जिसे हम जानते थे सो गई और उसने अपने बच्चे को डूबने दिया। एक मौत पागल मन का जान-बूझकर किया गया काम था जबकि दूसरी मौत बेपरवाही के कारण थी, परन्तु परिणाम दोनों का एक ही था और यह परिणाम की बच्चे के दर्दनाक मौत थी।

परमेश्वर के वचन के साथ बेपरवाह होना

हमारे वचन पाठ *सुसमाचार* के साथ बेपरवाह होने की त्रासदी पर आधारित हैं। पहले तो यह त्रासदी इस कारण है क्योंकि यह *मसीह का* वचन है। लेखक ने ''स्वर्गदूतों के द्वारा कहे गए वचन'' (आयत 2; देखें प्रेरितों 7:53; गलातियों 3:19) (पुराना नियम) को ''प्रभु की कही गई बात'' (आयत 3) (नया नियम) से अलग बताया।

''स्वर्गदूतों के द्वारा कहे गए वचन'' के अधीन ''हर अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक ठीक बदला मिला'' (आयत 2)। सब्त के दिन लकड़ियां बीनने वाले व्यक्ति को पथराव करके मार डाला गया था (गिनती 15:32-36)। उज्ज़ा के पवित्र सन्दूक को छूने पर, वह मर गया था (2 शमूएल 6:3-7)। यदि स्वर्गदूतों की ओर से दिए गए प्रकाशन को मानने के लिए ऐसा दण्ड था तो लेखक हैरान था कि इतने बड़े उद्धार[4] की बेपरवाही करने वालों का क्या होगा। जो ''प्रभु के द्वारा बताया गया'' था (आयत 3)?

''गारन्टी वाले'' सुसमाचार के साथ बेपरवाह होना

दूसरा, सुसमाचार के साथ बेपरवाह होना त्रासद बात है क्योंकि यह ''गारन्टी वाला'' सुसमाचार है। लेखक ने ज़ोर देकर कहा कि ''हमें *निश्चय* हुआ'' (आयत 3)। अपने अनुवाद में विलियम बार्कले ने ''गारन्टी वाला'' शब्द का इस्तेमाल प्रभु द्वारा कहे गए वचन में किया।[5] हम में से अधिकतर लोग गारन्टी वाली चीज़ें खरीदना पसन्द करते हैं क्योंकि उन में हमें भरोसा होता है। प्रभु स्वयं सुसमाचार की गारन्टी देता है इस कारण हम इसकी शिक्षा को अपनी अनन्त आत्माएं सौंप सकते हैं।

हमारे वचन पाठ में तीन गवाह हैं जो सुसमाचार की प्रामाणिकता की पुष्टि करते हैं।

- यीशु: ''इसकी चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई'' (आयत 3)।
- प्रेरित और परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए अन्य वक्ता: ''सुनने वालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ'' (आयत 3)।
- परमेश्वर, ने आश्चर्यकर्मों के द्वारा जो उसने प्रेरितों तथा अन्य लोगों[6] को करने के योग्य बनाया: ''परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिह्नों, और अद्‌भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा'' (आयत 4)।[7]

यदि हम मसीह के वचन की बेपरवाही करते हैं तो यह कितना त्रासद होगा! गारन्टी वाले सुसमाचार से मसीही लोगों का दूर बह जाना कितना भयानक है!

समाधान

हम बह जाने से कैसे बच सकते हैं? हम लापरवाही के पाप से अपनी रक्षा कैसे कर सकते हैं? हमारे वचन पाठ के आरम्भिक शब्दों में वापस जाएं: ''हम उन बातों पर जो हमने सुनी हैं, *और भी मन लगाएं,* ऐसा न हो कि बहकर उनसे दूर चले जाएं'' (आयत 1)। नील आर. लाइटफुट ने लिखा है:

> जब भी वे सभा में आते होंगे (देखें याकूब 2:2) वे सुनने को उत्सुक होकर अपनी सीटों के किनारे पर बैठते होंगे। बहुत बार, जब मैं और आप बाइबल क्लास और आराधना के लिए आते हैं, तो हम में शारीरिक और मानसिक रूप में जोश की कमी होती है। आत्मिक मामलों अर्थात सनातन मामलों के सम्बन्ध में हममें कहीं अधिक निश्चितता होनी आवश्यक है![8]

हमें परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना आवश्यक है। फिर हमें इस पर मनन करना और इसकी समीक्षा करते रहना आवश्यक है ताकि हम कभी इससे फिसलें नहीं।[9] अन्त में हमें वचन को व्यवहार में लाना आवश्यक है।

हम यह काम बिना परमेश्वर के नहीं कर सकते। हमें कितने धन्यवादी होना चाहिए कि उसने हमें सहायता करने की प्रतिज्ञा की (1:17, 18; भी देखें 4:14-16; 13:5ख, 6)। परन्तु परमेश्वर हम से वही करने की अपेक्षा करता है जो हम कर सकते हैं। हम निजी जिम्मेदारी से बच नहीं सकते। वफ़ादार रहने के लिए हमें प्रभु के ''बड़े उद्धार'' की इच्छा सच्चे मन से करके इस प्रयास को करना आवश्यक है!

सिखाने वाले के लिए नोट्स

KJV में 2:1 में ''बहना'' के बजाय ''फिसलना'' है। ''ऐसा न हो ... कि हम उन से फिसल जाएं।'' जब मेरा भार कम होता है तो मेरी शादी की अंगूठी कई बार मेरी ऊंगली से फिसल जाती है। जब मैं अपने परिवार के साथ ऑस्ट्रेलिया में रहता था, उस समय एक बार यह

अंगूठी कई महीने तक गुम रही। फिर मुझे एक पेड़ के नीचे मिली जहां ग्वाला दूध रखता था। स्पष्टतया किसी दिन सुबह दूध की बोतलें उठाते समय वह अंगूठी मेरे हाथ से फिसल गई थी। मैंने क्रोध में आकर या जान-बूझकर शादी की अपनी अंगूठी को नहीं फैंका था, यह तो यूं ही मेरी ऊंगली से निकल गई थी। इसी प्रकार से कई लोग अपने विश्वास, अपने समर्पण, परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को फिसलने देते हैं।

आपको इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि *टुकराए हुए अवसर* कभी दोबारा नहीं मिलते। एक पुरानी कहावत है, ''तीन चीज़ें कभी वापस नहीं आती-बात ज़बान से, तीर कमान से और तलवार म्यान से।''

टिप्पणियां

[1]इब्रानियों की पुस्तक आगे आशा के आत्मिक लंगर की बात करती है (6:19)। [2]''विश्वास'' परमेश्वर के प्रति आज्ञापालन की मसीही जीवनशैली को कहा गया है (देखें प्रेरितों 14:22; 16:5; 1 कुरिन्थियों 16:13)। [3]मैंने यहां दो उदाहरण दिए हैं, पर आप जहां रहते हैं उस समाज से मेल खाते उदाहरणों का इस्तेमाल करें। [4]उस ''बड़े उद्धार'' पर चर्चा अगले पाठ ''यीशु हमारे जैसा क्यों बना'' में की गई है। [5]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू दि हिब्रूस,* 3रा संस्क., संशो. एवं अपडेटड, दि न्यू डेली स्टडी बाइबल (लुईसविल्ले: वेस्टमिंस्टर जॉन नॉक्स प्रैस, 2002), 24. [6]''अन्य'' उन लोगों को कहा गया है जिनके ऊपर प्रेरितों ने हाथ रखे थे (देखें प्रेरितों 8:17, 18)। [7]ध्यान दें कि आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य वचन की पुष्टि करना था। एक बार पुष्टि हो जाने पर बार-बार पुष्टि करने की आवश्यकता नहीं थी। [8]नील आर. लाइटफुट, स्पोर्ट वर्थ टैक्सस में 14 सितम्बर 1985 को इब्रानियों की पुस्तक पर एसीयू, एक्सटेंशन की क्लास में पढ़ाया गया। [9]किसी के दिमाग से निकल जाने वाली जानकारी का उदाहरण भी मिला लें, यदि इसका इस्तेमाल न हुआ हो।